Vol 6 Issue 6 July 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 6 | July - 2016

Indian Streams Research Journal
International Recognized Multidisciplinary Research Journal
ISSN No : 2230-7850 Impact Factor : 4.1625 (UIF) [Yr. 2016]

Indian Streams Research Journal

स्वाभिमानी स्त्री का आस्मितादर्श 'सुनो शेफाली'

डॉ. लक्ष्मण तुळशीराम काळे
हिंदी विभागाध्यक्ष, राजीव गांधी महाविद्यालय, मुदखेड
जिला–नांदेड (महाराष्ट्र)

सार :
'सुनो शेफाली' हिंदी नाट्य साहित्य की एक ऐसी महान कृति हैं जो दलित स्त्री के आक्रोश को बुलंद वाणी प्रदान करती हैं। साथ ही दलित स्त्री जीवन की राजनीतिक हवस के शीकार की व्यंग्यात्मक वास्तविकता को प्रस्तुत करनेवाली जीवंत रचना हैं। वर्तमान समय में सत्ता पाने के लिए राजनीतिक हथखंड़ों की भरमार एक बाढ़ सी नजर आती हैं। जो घृनास्पद और अत्यंत शोचनीय हैं। परंतु इससे भी दर्दनाक और शर्मनाक एक राजनीतिक चाल जो कि, एक दलित स्त्री को पारिवारिक रिश्तों में कैद कर दलितों के

उद्धारक होने का मुखौटा लगाकर दलित वोट पाने का घृनास्पद वास्तव हैं।
विवाह के पवित्र बंधन में बंधकर पति–पत्नी होने के नाजुक भावों पर भी स्वार्थलोलुपता की गंदी राजनीति करनवालों पर यह नाटक एक तमाचा हैं। नाटक की नायिका शेफाली नामक दलित युवती राजनीति की इस वहशीयत भरी चाल का पर्दाफाश करती हैं। किंतु उसी की सगी बहन किरन अपने बहन के प्रेमी के साथ शादी करके अपने मॉ–बाप के प्रति स्त्री होने के बोझ को हटाकर संतुष्ट होने के भाव बिखेरती हैं। इन दो परस्पर विलोम तत्वों का दर्शन इस नाटक में हुआ हैं। कुछ भी हो मगर एक दलित युवती सच्चा प्रेम करते हुए भी जब यह भनक पाती हैं कि, राजकीय प्रयोजनों के लिए एक उच्च वर्णीय युवक से प्रेम करवाया गया हैं, और अब शादी की जल्दबाजी भी की जा रही हैं। तब उनके दुषित मनसुबों को वह अंजाम तक पहुँचने नही देती। वरन् अपने प्रेम का बलिदान कर दती हैं। शेफाली दलित होकर भी प्रचुर स्वाभिमानी स्त्री हैं। यह विशेष हैं, आज स्त्री जागरण में वह भारत के स्वाभिमानी स्त्री का प्रतिनिधित्व कर रही हैं।

बीज संज्ञा : 'सुनो शेफाली', स्वाभिमानी स्त्री, आस्मितादर्श.

प्रस्तावना :

नाटक प्रत्यक्ष रुप से दर्शकों एवं पाठकों पर गहरा प्रभाव डालता हैं। इसी श्रेणी में 'सुनो शेफाली' इस नाट्य रचना के माध्यम से कुसुम कुमार जी ने जो कि स्वएं एक स्त्री हैं। उन्होने दलित स्त्री जीवन की मार्मिक एवं वास्तविक तस्वीर को जीवंतता से उकेरा हैं। कुसुम जी ने राजनीतिक विकृती की चरम सीमा को प्रबुद्ध पाठकों के समीप रखकर विचार करने पर बाध्य किया हैं कि, क्या एक स्त्री को वह भी एक दलित हैं, उसे उच्च वर्णीय परिवार ने रिश्तों में कैद कर राजनीतिक हवस का शीकार बनाया हैं। व्यक्ति इस प्रकार की सोच भी कैसे सकता है। यह एक यक्ष प्रश्न उपस्थित किया हैं और वर्तमान स्वार्थपरख राजनीति का पर्दाफाश किया हैं।

कुसुम कुमार पैनी दृष्टि की एक सशक्त नाटककार हैं। नाटक साहित्य में वह विशेष विख्यात नाटककार हैं। इसलिए डॉ. कुसुम कुमार जी को नाट्य लेखन के लिए सन् 1982–83 तथा 1997–98 में हिंदी अकादमी दिल्ली की ओर से 'साहित्यकार सम्मान' से सम्मानित किया गया। तथा 'हीरामन हाई स्कूल' इस उपन्यास के लिए हिंदी अकादमी दिल्ली द्वारा पुरस्कृत किया गया। कविता, उपन्यास, एकांकी, नाटक आदि साहित्य क्षेत्र में कुसुम जी सिद्ध हस्त हैं। उनका पीएच. डी. उपाधि के लिए लिखा 'हिंदी नाट्य चिंतन' शोध प्रबंध हिंदी नाट्य

चिंतन में बहुचर्चित रहा हैं। जो नाट्य साहित्य के अध्येताओं के लिए मिल का पत्थर हैं। ऐसे पुख्ता और उमदें विचारोंवाली कुसुम जी ने वर्तमान समय और समाज में कितनी गंदी और गिरी हुई रातनीति की जा रही हैं। इस बात की ओर पाठकों की दृष्टि केंद्रित की हैं।

सुनो शेफाली :

'सुनो शेफाली' स्त्री चरित्र प्रधान और राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक समस्यामूलक स्थितियों पर केंद्रित लिखी नाट्य रचना हैं। स्त्री शक्ति की जीवंत थिम के कारण यह नाटक हमारे इर्द–गिर्द घटित घटना का सूचक सिद्ध होता हैं। नाटक की प्रमुख स्त्री पात्र शेफाली के इर्द–गिर्द नाटक की कथा मंड़राती हैं। शेफाली और बकुल विजातीय होकर भी एक–दूसरे से प्रेम करते हैं। अक्सर यमुना के घाट पर बैठकर अत्यंत भाऊक होकर प्रेमपूर्ण बाते करते रहते हैं। यमुना के दूसरे घाट पर मननदेव आचार्य का डेरा हैं। मनन जो स्वयं को एक शुद्ध ज्योतिषी न होकर ज्योतिषी होने का मात्र ढोंग करता हूँ ऐसा स्वयं कहता हैं। फिर भी है कि लोग किसी–न–किसी समस्या को लेकर मननदेव के पास अपना भाग्य अजमाने आते हैं। मननदेव केवल शेफाली को ही अपनी सच्चाई बयान करते हैं। और शेफाली भी निश्चिंत रुप से मननदेव आचार्य के साथ निर्भिक होकर बाते करती हैं।

एक दिन बकुल के पिता सत्यमेव दीक्षित भी मननदेव के पास अपना राजनीतिक भविष्य देखने आते हैं। मनन से कहते हैं कि, मै अपना निकट भविष्य जानने आया हूँ। इस पर मनन व्यंग्यात्मक रुप से कहते हैं, "अपना परसो जानने की फुरसत जिनके पास नहीं होती, वे ज्यादातर राजनीति से जुड़े हुए कुछ महापुरुष हुआ करते हैं। लगता हैं आप भी राजनीति से पाणिग्रहण करने के इच्छुक कोई ....."[1] इस पर सत्यमेव स्वएं को एक समाजसेवी होने का दावा करते हैं। मनन द्वारा इस दावे को ठुकराए जाने पर वह बौखला–सा जाता हैं। उसे याद आता हैं कि, उसे जब थोड़ी–बहुत अंग्रेजी सीखने की जरुरत पड़ी थी तब एक पहचान की लेड़ी डॉक्टर ने अंग्रेजी पढ़ाने के लिए उनके घर एक लड़की को भेजा था। उसका सत्यमेंव के बेटे बकुल के साथ प्रेम हुआ था। वह लड़की शेफाली ही हैं। वह यह भी कहते हैं कि इसी शेफाली के साथ अपने बेटे की शादी करने का वह बहुत बड़ा समझौता कर रहे हैं। मनन सत्यमेव से कहते हैं–"अपने अहंकार का झंड़ा गाड़ने के लिए आपको जिस लड़की के कोमल कंधों की जरुरत हैं, वह आपको नहीं मिलेगी। वह लड़की भोली हो सकती हैं, पर बहुत बड़े अहं की मालिक हैं ....."[2] यहॉ स्पष्ट हैं कि, शेफाली एक दलित स्त्री होकर भी अत्यंत स्वाभिमानी हैं। स्कूल में पढ़ते समय पिछड़े प्रवर्ग को मिलनेवाली रियायत और सुविधाओं को वह अस्वीकार कर देती हैं। "स्कूल में कभी किताबें बॅटती हैं, कभी मुफ्त में ऊन मिलती हैं, कभी वर्दी का कपड़ा ..... लेकिन हम तीनों बहनें कोई रियायत नहीं लेती .....हम क्यों कहें कि हम हरिजन हैं?[3] यहॉ शेफाली का स्वाभिमानी होना एवं अपने परिवार को मुफ्त मिलनेवाली चिजों से दूर रखकर स्वएं के बल पर बड़े होने के भाव अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

शेफाली की मॉ अपने अर्थहीन जीवन से उबकर उसे बार–बार कहती हैं कि, तू बकुल से शादी करके एक खाते–पिते खानदान में बस जा। ताकि मेरे सर का एक बोझ हट जाएगा। शेफाली यह जान जाती है कि बकुल का बाप बकुल की शादी शेफाली से क्यों करना चाहता है और विशेष कर इतनी जल्दबाजी क्यों कर रहा हैं। वह अपनी मॉ से कहती हैं, "तू क्या उन्हे इतना भोला समझती हैं अम्मा? वह क्यों शादी करता चाहते हैं मुझसे – अभी .....इसी वक्त .....मै खूब समझती हूँ .....बाप–बेटा अपनी समाज सेवा की हथेली पर सरसों जमाना चाहते हैं .....एक हरिजन लड़की का उद्धार किया उन्होंने यही कह–कहकर अपने लिए जिंदाबाद के नारे लगवाएँगे .....और मैं?.....उनके विज्ञापन का एक वाक्य बनूँ .....।"[4] शेफाली अपनी मॉ से इस शादी का पुरजोर विरोध करती हैं। वह सत्यमेव और बकुल के हाथ का खिलौना कतई बनना नहीं चाहती। शेफाली का विरोध देखकर बड़ी धुर्तता से सत्यमेव अपने बटे बकुल की शादी उसी की बहन किरण के साथ करा देते हैं। यह देखकर शेफाली अपने–आप में चकनाचूर हो जाती हैं। और अपनी बहन से केवल इतनाही कहती हैं–"किरण ..... बहन, तू ?" इसी वाक्य के साथ नाटक का अंत होता हैं। यहॉ कुसुम जी समाज के भविष्य पर विचार मंथन करने की जिम्मेदारी पाठकों पर सौप देती हैं।

नाटक के संवेदनशील कथ्य से निम्नांकित महत्वपर्ण पहलू उजागर होते हैं–

अंतर्जातीय विवाह के लिए घातक स्थितियॉ :

प्रस्तुत नाटक 'सुनो शेफाली' में एक उच्च वर्णीय युवक निम्नवर्णीय युवती से प्रेम करता हैं। परंतु प्रेम की कसौटी पर खरा नही उतरता। इस बात के दो प्रमाण स्पष्ट हैं। एक यह कि वह शेफाली के साथ निस्वार्थ प्रेम नही करता। उसके प्रेम के पीछे राजनीतिक स्वार्थ स्पष्ट झलकता है। दूसरा यह कि प्रेम की पवित्र धारा तोड़कर शेफाली की बहन किरन के साथ शादी करता हैं। उसकी सच्ची प्रेमिका शेफाली जब जानती हैं कि उसके प्रेम के पीछे स्वार्थता के कीड़े बिलबिलाते नजर आते हैं। तब उसके खॉब बिखर जाते हैं। स्पष्ट हैं कि अंतर्जातीय विवाह करने से धर्मनिरपेक्षता को बढ़ावा मिलता हैं। पर यहॉ जातीय और धर्मीय आधार पर वोट पाने की राजनीतिक स्वार्थता को पाने के लिए अंतर्जातीय विवाह करने की हवस ने अंतर्जातीय विवाह की प्रेरणा को विद्रुप कर दिया हैं। इस प्रकार की स्थितियॉ देश एवं समाज के लिए अत्यंत घातक हैं।

राजनीतिक स्वार्थ से अंतर्जातीय विवाह :

प्रस्तुत नाटक में बकुल अपने पिता के साथ मिलकर राजसत्ता पाने हेतु दलित युवती से प्रेम कर शादी की जल्दबाजी करता हैं। शेफाली स्वाभिमानी स्त्री हैं। वह बकुल और उसके पिता के मनसुबों को भॉपकर शादी की जल्दबाजी करने पर उत्तर देती हैं– "हम वहॉ से एक जीप पर रवाना होते हैं ....शहर भर में हम लाउड़स्पीकर पर बोलते हैं .....वोट दीजिए हमें .....बहनों और भाइयों, वोट! तुम मुझसे ऊँचे खड़े हुए हो। कहते जा रहे हो–'वोट फॉर दीक्षित .....वोट फॉर .....' लोग सड़क के दोनों ओर अपने–अपने मकान की ओर बढ़े जा रहे है। उनका ध्यान तुम कुछ और आकर्षित करना चाहते हो, इसलिए जीप पर एक चौराहे के ऐन बीच रोककर बोलना शुरु करते हो–'बहनों और भाइयों .....अपना वोट हमें देकर अपना भविष्य उज्वल बनाइए .....यह बात आप से आज यहॉ इस जीप में मौजूद एक हरिजन लड़की कह रही हैं। इस लड़की को मैं आज ही अभी–अभी ब्याहकर ला रहा हूँ। .....गरीबी को हटया जाना इस देश के लिए जितना जरुरी हैं ....उतना ही ..... उतना ही हरिजनों का उद्धार भी। अब तक इस दिशा में हमने जितने प्रयास किये, वे सब असफल रहे .....अछूतोध्दार कर इस दिशा में सभी

प्रयत्न असफल होते देखकर मैने निराशा की स्थिति में पहले इस हरिजन लड़की से प्रेम किया, फिर शादी कर ली .....लीजिए, भाइयों और बहनों, अब तो आप हमें ही देंगे ना अपना कीमती वोट।"[5]

एक दलित स्त्री को अपने घर की बहु बनाकर वोट पाने के लिए उसके व्यक्तित्व का बॅनर बनाना इतनी गंदी विचारधारा राजनीति में आदमी सोच भी कैसे सकता हैं? यहॉ एक स्त्री के व्यक्तित्व का अस्तित्व, स्वाभिमान, मान–सम्मान सब दॉव पर लगाया जा हर हैं। यह अत्यंत शोचनीय एवं निंदनीय हैं। ऐसी सोच रखकर अंतर्जातीय विवाह करना जातीयता की पुष्टि करना ही हैं। और ऐसा करना निषेधार्य हैं।

एक सहृदय मॉ विवशता से व्यवस्था का शिकार :

शेफाली की मॉ अत्यंत पीछड़े एवं गरीब परिवार की औरत हैं। अपने परिवार की परवरिश के लिए दुसरों के यहॉ काम करके अपनी जीविका चलाती हैं। ऐसे में जब सत्यमेव दीक्षित बकुल के लिए शेफाली का हाथ मॉगता हैं तब उसे बड़ी प्रसन्नता होती हैं। खाते–पिते घर में शेफाली के बस जाने का विचार उसे आनंदित कर देता हैं। किंतु जब शेफाली बकुल और उसके पिता के गंदे राजनीतिक इरादों को अपने मॉ के सामने रखकर विवाह का विरोध करती हैं। तब भी मॉ शेफाली का विवाह बकुल से करने के लिए आग्रह की भूमिका लेती हैं। शफाली की बकुल के प्रति उमड़ी इस नफरत को देख सत्यमेव दीक्षित उसकी मॉ के सामने किरन के विवाह का प्रस्ताव रखता हैं। इसे मॉ स्वीकारती हैं। तब बकुल और किरन का विवाह सम्पन्न हो जाता हैं। यहॉ यह स्पष्ट हैं कि एक गरीब मॉ अपने बेटी की शादी के बोझ से दूर होना चाहती हैं। इससे एक बेटी का बोझ तो उसके सर से कम होगा। वह विवश हैं कि बकुल का प्रेम उसकी एक बेटी के साथ और विवाह दूसरी बेटी के साथ। ऐसा करना उसे भी अनुचित लगता हैं किंतु एक बेटी को पहुॅची ठेच के दुःख से दूसरे बेटी के विवाह का बोझ दूर होने का सुख उसे अधिक आकृष्ट करता हैं। जाहिर हैं कि वह परिस्थितियों से कितनी कमजोर और विवश मॉ हैं।

उसके मन में शेफाली के प्रति अपार आस्था हैं पर वह कर भी क्या सकती हैं। एक सहृदय मॉ व्यवस्था से विवश होकर ऐसा निर्णय लेती हैं। और इसी नाजुक परिस्थिति का लाभ पूॅजिपती उठा रहे हैं। यहॉ परिस्थिति की यथार्थता से जुझने वाली स्त्री की विव्हलता स्पष्ट होती हैं।

सच्चे प्रेम का दिखावा :

बकुल एक उच्च वर्णीय युवक हैं। शुरु में शेफाली के प्रति उसका प्रेम समर्पण के भावों से हैं। परंतु जब सत्यमेव दीक्षित राजनीतिक सत्ता पाने के लिए हावी होते हैं तब बकुल अपने पिता का साथ देने की पूरजोर कोशिश करता हैं। उसिका नतिजा कि शेफाली के साथ किए गए प्रेम में आग का दरिया उफन आता हैं। सच्चे प्रेम के किस्सों में कई बार सुना हैं कि प्रेमि अंत तक एक दूसरे का साथ निभाते हैं। चाहे मौत ही क्यों न आए। किंतु इससे विपरित स्थितियॉ शेफाली के साथ घटित हुई हैं। बकुल पिता का साथ देते हुए प्रेयसी शेफाली को मजबुर करने की कोशीश करता हैं। शादी की जल्दबाजी करते हुए उसे टोकने लगता हैं। बकुल के इन नापाक इरादों को ठुकराकर शेफाली अपने प्रेम का बलिदान कर देती हैं। यदि बकुल ने उसके साथ सच्चा प्रेम किया होता तो अपने पिता के कहने में आकर शेफाली का साथ न छोड़ता। परंतु ऐसा नही हुआ। समाज की इस दुषित मनोवृत्ति और राजसत्ता को पाने के लिए वे क्या कुछ नही कर सकते इस बात का पर्दाफाश हुआ हैं। बकुल जैसा युवक सच्चे प्रेम से नहीं बल्कि षड़यंत्रकारी मनोवृत्ति से प्रेम का वास्ता देता हैं। बकुल का शेफाली के प्रति केवल दिखावे का प्रेम हैं। उसे राजनीतिक वोट पाने की सहायता का मात्र एक उपकरण समझा गया हैं। एक जिती–जागती स्त्री को उपकरण समझकर सत्ता पाना लोकतंत्र के लिए बाधक और घातक हैं।

स्त्री की स्वाभिमानीता और आस्मितादर्श :

सच्चे प्रेम का बलिदान कर सामाजिक, राजनीतिक विकृतियों पर आक्रोश से बुलंदित स्वर उठाने वाली युवा स्त्री शेफाली केवल अपने स्वार्थ के लिए जिनेवाली स्त्री नहीं हैं। वह अपना जमिर सुसंस्कृत और विवेक संपन्नता से निर्माण कर दुषित विचारों को जड़ से मिटाने का प्रयास करते हुए कहती हैं, "बाप–बेटा अपनी समाज सेवा की हथेली पर सरसो जमाना चाहते हैं .....एक हरिजन लड़की का उध्दार किया उन्होने–यही कह–कहकर अपने लिए जिंदाबाद के नारे लगवाऍगे .....और मैं? .....उनके विज्ञापन का एक वाक्य।"[6] शेफाली भरतीय युवतियों का प्रतिनिधित्व करनेवाली निड़र एवं समाजशील स्त्री हैं। जो किसी भी प्रलोभन के आगे अपने जमिर को झुकने नही देती।

नाटक के अन्य स्वाभिमानी स्त्री के रुप में मिस साहब भी एक आदर्श स्त्री हैं। अपनी दाल न गलने पर सत्यमेव दीक्षित मिस साहब की ओर से शेफाली पर दबाव लाना चाहते हैं। उनकी नजरों में बकुल अपनी पिता के बगल में दबा हुआ युवक हैं। मिस साहब सत्यमेव को फटकारती हैं, "मैने कहा न, आप जा सकते है! शेफाली ठीक कहती हैं .....वह एकदम सही सोचती हैं .....बकुल को इस तरह आप की बगल में भीगी बिल्ली देखकर आज पहली बार मुझे उस बच्ची पर तरस आ रहा हैं ....."[7] यहॉ स्पष्ट हैं कि मिस साहब जैसी स्त्री शेफाली के आचरण, उसकी निर्भयता और विचारों को पुष्टी देती हैं। साथ ही कायरों को लगाम लगाने की कोशिश करती हैं। मिस साहब भी एक सशक्त स्वाभिमानी स्त्री हैं यहॉ दोनों स्त्रियों के आचरण, निर्भयता एवं चरित्र से स्त्री की स्वाभिमानीता एवं अपने अस्तित्व के आस्मितादर्श की पहचान होती हैं। यह इस नाटक की बहुत बड़ी उपलब्धि हैं।

स्त्री–स्त्री का दया भाव :

हर व्यक्ति अपने से दूसरे व्यक्ति के जेसा नहीं होता न स्वभाव में न सौष्ठव में। इस बात की प्रतीति नाटक के अंत में करुण रस के साथ होती हैं। शेफाली अंत तक बकुल से शादी का विरोध करती रही। दलितो के वोट पाने की हवस का शिकार वह नहीं बनी परंतु उसिकी छोटी बहन किरन फॅस गयी। जब शिववालय में बकुल और किरन को वह माला पहने देखती हैं तब उसकी ऑखे करुणा से भर आती हैं। उसने किरन का प्रतिरोध नही किया उसके मुॅह से कुछ शब्द अपने आप निकल पड़े–"किरन बहन तू?"[8] उसे अहसास हुआ कि मैने पूरी ताकत से जिस बात का विरोध किया उस बात के लिए मेरी अपनी बहन ने अवसरवादी राजनीतिक कायरों का साथ दिया। यहॉ बकुल और

सत्यमेव विजयी हुए। उन्होने शेफाली की बहन के जरिए यह विजय पा ली थी। समाज की इस यथार्थता को स्पष्ट किया गया हैं। कि निर्बल घटकों का उपयोग वह अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए हमेशा से करते आए हैं। और आज भी कर रहे हैं।

शेफाली एक स्त्री है उसने किरन और मॉ की विवशता तथा परिस्थितियों के जाल को देखा, महसूसा तब उसे अहसास हुआ कि, मै पूरजोर विरोध के बावजूद भी आखिर हार गई। परंतु उसने अपनी बहन पर क्रोधित होकर आक्रोश प्रकट नही किया क्योंकि वह एक मार्मिक स्त्री हैं। और बसे हुए एक स्त्री का परिवार वह तोड़ना नही चाहती। इस प्रकार स्त्री–स्त्री के साथ दया के भावों से अप्लावित होती हैं।

निष्कर्ष :

'सुनो शेफाली' अत्यंत संवेदनशील विचारों को प्रस्तुत करनेवाला नाटक हैं। स्त्री, पीछड़ वर्ग, राजनीति,स्वार्थ लोलुप हव्यास जैसे विषयों पर केंद्रीत यह नाट्य रचना हैं। जिसमें प्रमुखतः वर्तमान राजनीतिक गतिविधियों को व्यंग्यात्मकता के साथ प्रस्तुत किया हैं। स्त्री को रिश्तों में कैद कर राजनीतिक लाभ पाने की जिज्ञासा को व्यंग्यात्मक शैली में अभिव्यक्त किया गया हैं। राजनीतिक स्वार्थ प्राप्ति हेतु दलित स्त्री को अपने घर की बहु बनाना और दलितों के साथ हमदर्दी जताकर वोट पाना यह एक घिनौनी राजनीतिक चाल हैं।

विवाह जैसे पवित्र संस्कार का यहॉ मजाक उड़ाया गया हैं। अंतर्जातीय विवाह को प्रोत्साहन देकर जातीयता को नष्ट करने के लिए पूरा देश प्रयत्नरत हैं। वहॉ अंतर्जातीय विवाह का वोट पाने की लालसा से लिप्त घातक विचार धारा विजातीय स्त्री को रिश्तों में कैद करना चाहती हैं। किरन जैसी विवश और बेबस युवती को रिश्तों मे कैद कर दिया जाता हैं। यह अत्यंत बिभत्स और स्वतंत्रता के लिए घातक बात हैं। हमने कल्पना तक नही की थी कि क्या विजातीय युवती को बहु के रुप में केवल वोटों के लिए स्वीकारा जाता हैं। तथा इस बात को बहुत बड़ा समझौता समझा जाता हैं। इस बात की व्यंग्यात्मकता और समाज की एक विकृत मानसिकता को यह रचना उजागर करती हैं। साथ ही राजनीतिक अवसरवादिता को भी स्पष्ट करती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1.सुनो शेफाली–कुसुम कुमार, हिमाचल पुस्तक भांड़ार, दिल्ली. संस्करण–2013, पृष्ठ–31
2.वही, पृष्ठ–36
3.वही, पृष्ठ–23
4.वही, पृष्ठ–38
5.वही, पृष्ठ–54
6.वही, पृष्ठ–38
7.वही, पृष्ठ–52
8.वही, पृष्ठ–56

आधार ग्रंथ :

डॉ. कुसुम कुमार एक प्रयोगधर्मी नाटककार–डॉ. दत्तात्रय वामनराव मोहिते, चिंतन प्रकाशन, कानपुर.प्रथम संस्करण–2015

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org